दैनिक भास्कर, 29-6-2014

पैरचलित चरखे व भेड़ों के वातानुकूलित शेल्टर हैं खास

भेड़ ऊन संस्थान अविकानगर यहां लगे चरखे भेड़ की ऊन कातने वाली महिलाओं के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं, गर्मी व लू के थपेड़ों के बावजूद ठंडक रहती है

महेश शर्मा | मालपुरा

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किए गए ऊन कताई के लिए पैर से चलने वाले चरखे व ग्रीष्म ऋतु में भेड़ों को राहत के लिए तैयार किया गया प्राकृतिक वातानुकूलित शेल्टर खास उपलब्धियों की सूची में शामिल है।

ऊन कातने वाली महिलाओं को लंबे समय तक पांव सिमेट कर बैठे रहने से पांवों में पैदा होने वाली बीमारियों से बचने के लिए वैज्ञानिकों ने अब पांव से चलने वाले चरखे का निर्माण किया है।

यह चरखे खास तौर पर कश्मीरी इलाके में भेड़ की ऊन कातने वाली कामगार महिलाओं के लिए उपयोगी साबित हो रहें है। वैज्ञानिकों द्वारा अविकानगर के सेक्टर नंबर नो में एक ऐसा वातानुकूलित शेड तैयार किया है जहां भीषण गर्मी व लू के थपेड़ों के बावजूद ठंडक रहती है इसमें ठंडे प्रदेशों से आयात की गई भेड़ों को राहत के लिए रखा जाता है।

इस शेड को ऊपर से यज्ञ मंडप का लुक दिया गया है लेकिन नीचे एक एक इंटों की दो दीवारे करी चार पांच फुट ऊंची बनाई गई है। इन दोनों दीवारों के बीच में दो चार इंच खाली जगह रखी गई खाती जगह में बालू मिट्टी भर कर उपर से पाइप लाइन द्वारा बूंद बूंद पानी टपकने की व्यवस्था है। इससे विधि से दोनों दीवारों के बीच की मिट्टी गीली रहती है तथा बाहर चलने वाली गर्म हवा से अंदर ठंड रहती है। उपर यज्ञ मंडप की तरह बनाए गए बांस की खपच्चियों के जाल में से नीचे की हवा का गुबार निकलता रहता है।

मालपुरा. अविकानगर में बनाया गया भेड़ों का वातानुकूलत शेल्टर।

मालपुरा. अविकानगर में तैयार किए ऊनी शॉल।

अविकानगर में बनाया गया यह प्राकृतिक वातानुकूलित शेड खास आकर्षण युक्त है। निदेशक डॉ. एस.एम.के. नकवी ने बताया कि ऊन की कतरन व कचरे में नाइट्रोजन होने से जहां पेड़ पौधों का तेजी से विकास होता है वहीं मींगणी की खाद में ऊन की कतरन होने से उसमें डाले जाने वाले पानी से अधिक समय तक नमी बनी रहती है। इस विधि से पौधों का तेजी से विकास होता है यह खाद अत्यंत लाभकारी है।

अविकानगर के सैल काउंटर पर इस खाद को थैलियों में पैक कर बेचा जा रहा है। संस्थान में सेल काउंटर पर कीमती पशमीना शॉल उपलबध नहीं कराया जाकर अधिकारियों द्वारा अपने स्तर पर गुपचुप तरीके से बेचने की चर्चा जोरों पर है। इसी प्रकार संस्थान की सैकड़ों बीघा पड़त भूमि में अनावश्यक रूप से चौड़ी-चौड़ी खाई खोद के लिए जेसीबी मशीन पर करीब पच्चीस लाख रुपए खर्च करने का मामला संस्थान में गरमा रहा है।

ऊन के कचरे से बनाई खाद

अविकानगर के वैज्ञानिकों ने कताई व बुनाई के दौरान शेष रहने वाले कचरे से अत्याधुनिक खाद तैयार कर कृषि क्षेत्र में नया आयाम स्थापित किया है। संस्थान निदेशक डॉ. एस.एम.के.नकवी के अनुसार वैज्ञानिकों के प्रयास से यहां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध भेड़ बकरियों की मींगणियां व ऊन के उक्त कचरे को मिला कर तैयार की गई खाद से कम पानी में अधिक उपज की ताकनीक इजात की है।